eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा का समाजशास्त्रीय अध्ययन

[1]डॉ0 शालिनी सोनी

[1]समाजशास्त्र विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय, बेहट (सहारनपुर) उ0प्र0

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

यह शोध–पत्र जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर द्वारा प्रतिपादित "सामाजिक क्रिया" की अवधारणा का समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रस्तुत करता है। वेबर के अनुसार समाजशास्त्र का उद्देश्य केवल सामाजिक संरचनाओं का अध्ययन नहीं, बल्कि व्यक्तियों द्वारा किए गए अर्थपूर्ण कार्यों की व्याख्या करना है। इस अध्ययन में सामाजिक क्रिया के स्वरूप, प्रकार, तथा उसकी व्याख्यात्मक पद्धति का विश्लेषण किया गया है। शोध में यह स्पष्ट किया गया है कि सामाजिक क्रिया Verstehen व्यक्ति की चेतना, मूल्य, भावनाओं तथा परंपराओं से प्रभावित होती है। साथ ही, इस अवधारणा की प्रासंगिकता और सीमाओं पर भी प्रकाश डाला गया है। निष्कर्षतः, वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा आधुनिक समाज के विश्लेषण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है।

कुंजी शब्द– सामाजिक क्रिया, तर्कसंगत क्रिया, भावात्मक क्रिया, परंपरागत क्रिया, मूल्य–तर्कसंगतता, समाजशास्त्र

Introduction

समाजशास्त्र एक ऐसा विज्ञान है जो मानव समाज, सामाजिक संबंधों तथा सामाजिक व्यवहार का व्यवस्थित अध्ययन करता है। समाज को समझने के लिए केवल उसकी संरचनाओं, संस्थाओं और व्यवस्थाओं का अध्ययन पर्याप्त नहीं होता, बल्कि यह भी आवश्यक है कि हम यह जानें कि व्यक्ति किस प्रकार सोचता है, किस आधार पर निर्णय लेता है और उसके व्यवहार के पीछे कौन–से अर्थ एवं उद्देश्य निहित होते हैं। इसी संदर्भ में जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। मैक्स वेबर ने समाजशास्त्र को एक नई दिशा प्रदान करते हुए यह प्रतिपादित किया कि समाज का वास्तविक स्वरूप व्यक्तियों की अर्थपूर्ण क्रियाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। उनके अनुसार, समाज केवल बाह्य संरचनाओं का समूह नहीं है, बल्कि यह उन क्रियाओं का परिणाम है जिन्हें व्यक्ति अपने दृष्टिकोण, विश्वासों, मूल्यों और अनुभवों के आधार पर करता है। इस प्रकार, वेबर ने समाजशास्त्र को एक व्याख्यात्मक विज्ञान के रूप में स्थापित किया, जिसका उद्देश्य सामाजिक क्रियाओं के पीछे निहित अर्थों को समझना है। वेबर की "सामाजिक क्रिया" की अवधारणा समाजशास्त्र के अध्ययन में एक केंद्रीय स्थान रखती है। यह अवधारणा इस बात पर बल देती है कि प्रत्येक मानव क्रिया सामाजिक नहीं होती, बल्कि वही क्रिया सामाजिक मानी जाती है जिसमें व्यक्ति अन्य व्यक्तियों के व्यवहार को ध्यान में रखते हुए कार्य करता है। इस दृष्टिकोण से वेबर का सिद्धांत समाज के सूक्ष्म स्तर के विश्लेषण को महत्व देता है और व्यक्ति की भूमिका को केंद्र में रखता है।

वर्तमान वैश्वीकरण एवं डिजिटल युग में, जहाँ सामाजिक संबंधों के स्वरूप में निरंतर परिवर्तन हो रहा है, वेबर की सामाजिक क्रिया की अवधारणा और भी अधिक प्रासंगिक हो जाती है। आज के

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

समय में सोशल मीडिया, ऑनलाइन संचार और वैश्विक अंतःक्रियाओं के माध्यम से व्यक्तियों के व्यवहार को समझने के लिए इस सिद्धांत का उपयोग अत्यंत उपयोगी सिद्ध होता है। अतः प्रस्तुत शोध–पत्र में मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया की अवधारणा का विश्लेषण करते हुए उसके स्वरूप, प्रकार, महत्व एवं समकालीन प्रासंगिकता का विस्तृत अध्ययन किया जाएगा। मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा समाजशास्त्र में एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रस्तुत करती है, जिसमें समाज को व्यक्तियों की अर्थपूर्ण क्रियाओं के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है। वेबर के अनुसार प्रत्येक क्रिया सामाजिक नहीं होती, बल्कि वही क्रिया सामाजिक मानी जाती है जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार को अन्य व्यक्तियों के संदर्भ में अर्थ प्रदान करता है। इस प्रकार सामाजिक क्रिया का स्वरूप मूलतः अर्थ–निष्ठ, व्यक्तिनिष्ठ तथा अन्य व्यक्तियों के प्रति अभिमुख होता है। यह दृष्टिकोण समाज को एक जीवंत प्रक्रिया के रूप में देखता है, जहाँ व्यक्ति अपनी चेतना, अनुभव, मूल्य और भावनाओं के आधार पर निर्णय लेता है और क्रियाएँ करता है।

तालिका– 01
सामाजिक क्रिया की परिभाषा एवं विशेषताएँ

क्रमांक	तत्व	विवरण
1	परिभाषा	सामाजिक क्रिया वह क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार को दूसरों के संदर्भ में अर्थ देता है
2	अर्थपूर्णता	प्रत्येक क्रिया के पीछे कोई न कोई उद्देश्य या अर्थ होता है
3	अन्योन्मुखता	क्रिया का संबंध अन्य व्यक्तियों के व्यवहार से होता है
4	व्यक्तिपरकता	क्रिया का अर्थ व्यक्ति के दृष्टिकोण पर निर्भर करता है
5	व्याख्यात्मक दृष्टिकोण	समाजशास्त्र का कार्य इन क्रियाओं को समझना (Verstehen) है

वेबर ने सामाजिक क्रिया को चार प्रमुख प्रकारों में विभाजित किया है, जो मानव व्यवहार की विविधता को स्पष्ट करते हैं। साधनात्मक तर्कसंगत क्रिया में व्यक्ति अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए तार्किक ढंग से साधनों का चयन करता है, जबकि मूल्य–तर्कसंगत क्रिया नैतिक, धार्मिक या सांस्कृतिक मूल्यों से प्रेरित होती है और इसमें परिणाम की अपेक्षा मूल्य की प्रधानता होती है। भावात्मक क्रिया भावनाओं जैसे प्रेम, क्रोध या घृणा से संचालित होती है, वहीं परंपरागत क्रिया रीति–रिवाजों, परंपराओं और आदतों के आधार पर की जाती है। ये सभी प्रकार यह दर्शाते हैं कि मानव व्यवहार केवल तर्कसंगत ही नहीं, बल्कि भावनात्मक, सांस्कृतिक और परंपरागत कारकों से भी प्रभावित होता है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

इस अवधारणा का महत्व इस तथ्य में निहित है कि यह समाजशास्त्र को केवल संरचनात्मक अध्ययन तक सीमित नहीं रखती, बल्कि व्यक्ति के दृष्टिकोण और उसके व्यवहार के पीछे निहित अर्थ को समझने पर बल देती है। यह सिद्धांत समाजशास्त्र को एक व्याख्यात्मक विज्ञान के रूप में स्थापित करता है, जहाँ "Verstehen" के माध्यम से सामाजिक क्रियाओं की गहन समझ विकसित की जाती है। इसके माध्यम से सामाजिक व्यवहार के कारणों, उद्देश्यों और प्रेरणाओं का विश्लेषण संभव हो पाता है, जिससे समाज के सूक्ष्म स्तर पर अध्ययन को बल मिलता है। इसके अतिरिक्त, यह सिद्धांत अन्य समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों के साथ संतुलन स्थापित करते हुए समाज के व्यापक विश्लेषण में भी सहायक सिद्ध होता है।

वेबर के अनुसार समाजशास्त्र का मूल उद्देश्य सामाजिक क्रियाओं को समझना और उनका व्याख्यात्मक विश्लेषण करना है। उन्होंने समाजशास्त्र को "सामाजिक क्रिया का अर्थपूर्ण व्याख्यात्मक अध्ययन" (interpretative understanding of social action) माना। सामाजिक क्रिया वह क्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार को दूसरों के व्यवहार के संदर्भ में अर्थ प्रदान करता है और उसी के अनुसार कार्य करता है। अर्थात् हर वह क्रिया सामाजिक नहीं होती, बल्कि वही क्रिया सामाजिक कहलाती है जिसमें दूसरों के प्रति अभिप्राय और प्रतिक्रिया निहित हो। वेबर के अनुसार सामाजिक क्रिया का मुख्य तत्व 'अर्थ' (meaning) है। व्यक्ति अपनी क्रिया को स्वयं अर्थ देता है और वही अर्थ समाजशास्त्र के अध्ययन का विषय बनता है। इसीलिए वेबर ने 'वर्स्टेहन' (Verstehen) पद्धति का उपयोग किया, जिसका अर्थ है व्यक्ति के दृष्टिकोण से उसके व्यवहार को समझना। यह पद्धति समाजशास्त्र को केवल बाह्य अवलोकन तक सीमित नहीं रखती, बल्कि व्यक्ति के आंतरिक उद्देश्यों, भावनाओं और मूल्यों को भी समझने का प्रयास करती है।

तालिका–02
सामाजिक क्रिया सिद्धांत का महत्व

क्रमांक	क्षेत्र	महत्व
1	समाजशास्त्रीय अध्ययन	व्यक्तियों के व्यवहार को समझने में सहायक
2	नीति निर्माण	सामाजिक नीतियों के निर्माण में उपयोगी
3	सामाजिक परिवर्तन	परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने में सहायक
4	अनुसंधान	गुणात्मक शोध में विशेष महत्व
5	आधुनिक समाज	जटिल सामाजिक संबंधों को समझने में सहायक

वेबर ने सामाजिक क्रिया को चार प्रमुख प्रकारों में वर्गीकृत किया। पहला, उद्देश्यपरक या साधन–तर्कसंगत क्रिया, जिसमें व्यक्ति किसी निश्चित लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए तार्किक ढंग से साधनों का चयन करता है। दूसरा, मूल्य–तर्कसंगत क्रिया, जिसमें व्यक्ति किसी नैतिक, धार्मिक या सांस्कृतिक मूल्य के आधार पर कार्य करता है, चाहे परिणाम कुछ भी हो। तीसरा, भावात्मक क्रिया,

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

जिसमें व्यक्ति अपनी भावनाओं और संवेदनाओं के प्रभाव में आकर कार्य करता है, जैसे क्रोध या प्रेम में किया गया व्यवहार। चौथा, पारंपरिक क्रिया, जो परंपराओं, रीति–रिवाजों और आदतों के आधार पर होती है।

सामाजिक क्रिया की विशेषता यह है कि यह दूसरों के व्यवहार से प्रभावित होती है और समाज में अंतःक्रिया की प्रक्रिया को जन्म देती है। वेबर के अनुसार यदि कोई व्यक्ति अकेले में कोई क्रिया करता है जिसका दूसरों से कोई संबंध नहीं है, तो वह सामाजिक क्रिया नहीं कहलाती। उदाहरण के लिए, अकेले में प्रार्थना करना सामाजिक क्रिया नहीं है, लेकिन यदि वही प्रार्थना सामूहिक रूप से की जाती है और उसमें अन्य लोगों की उपस्थिति और अपेक्षा जुड़ी हो, तो वह सामाजिक क्रिया बन जाती है।

वेबर की सामाजिक क्रिया की अवधारणा में व्यक्तिवाद (methodological individualism) का महत्वपूर्ण स्थान है। उन्होंने यह माना कि समाज का निर्माण व्यक्तियों की क्रियाओं से होता है, इसलिए समाज को समझने के लिए व्यक्तियों के व्यवहार और उनके द्वारा दिए गए अर्थों का अध्ययन आवश्यक है। यह दृष्टिकोण दुर्खीम के सामाजिक तथ्यों (social facts) के दृष्टिकोण से भिन्न है, जो समाज को व्यक्ति से ऊपर मानता है।

वेबर का यह सिद्धांत आधुनिक समाजशास्त्र में अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह मानव व्यवहार को केवल बाहरी कारणों से नहीं, बल्कि आंतरिक अर्थों और उद्देश्यों से भी जोड़ता है। यह सिद्धांत सामाजिक अनुसंधान में गुणात्मक पद्धतियों (qualitative methods) के विकास में सहायक रहा है और आज भी सामाजिक विज्ञानों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

समकालीन संदर्भ में यह अवधारणा और अधिक प्रासंगिक हो गई है, क्योंकि आज का समाज वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और डिजिटल संचार के कारण तेजी से बदल रहा है। सोशल मीडिया, ऑनलाइन अंतःक्रियाएँ और वर्चुअल नेटवर्किंग के युग में व्यक्तियों के व्यवहार को समझने के लिए केवल बाहरी संरचनाओं का अध्ययन पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके पीछे निहित अर्थ, उद्देश्य और भावनात्मक पक्ष को समझना आवश्यक है। उदाहरणस्वरूप, सोशल मीडिया पर किसी विचार को साझा करना, ऑनलाइन आंदोलनों में भाग लेना या डिजिटल प्लेटफॉर्म पर अपनी पहचान का निर्माण करना, ये सभी सामाजिक क्रियाएँ हैं जिनका विश्लेषण वेबर के दृष्टिकोण से प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इस प्रकार, सामाजिक क्रिया की अवधारणा न केवल पारंपरिक समाज के अध्ययन में, बल्कि आधुनिक और उत्तर–आधुनिक समाज के विश्लेषण में भी अत्यंत उपयोगी और प्रासंगिक सिद्ध होती है।

1.1 शोध की आवश्यकता (Need of the Study)– वर्तमान समाज अत्यधिक जटिल एवं परिवर्तनशील हो गया है, जहाँ व्यक्तियों के व्यवहार को समझना केवल संरचनात्मक दृष्टिकोण से संभव नहीं है। ऐसे में सामाजिक क्रिया की अवधारणा, जो व्यक्ति के व्यवहार के पीछे निहित अर्थ और उद्देश्य को समझने पर बल देती है, अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

विशेषतः डिजिटल युग, वैश्वीकरण और सामाजिक अंतःक्रियाओं के नए रूपों को समझने के लिए इस सिद्धांत का पुनः अध्ययन आवश्यक है।

1.2 समस्या का स्वरूप एवं व्याख्या (Statement of the Problem)– इस शोध का मूल प्रश्न यह है कि–

- क्या सामाजिक व्यवहार को केवल बाहरी संरचनाओं के आधार पर समझा जा सकता है, या इसके लिए व्यक्ति के दृष्टिकोण और अर्थ को समझना आवश्यक है?
- वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है, किंतु इसकी व्यावहारिकता, सीमाएँ एवं समकालीन संदर्भ में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना आवश्यक है।

1.3 अध्ययन का औचित्य (Rationale of the Study)–

- यह अध्ययन समाजशास्त्र के व्याख्यात्मक दृष्टिकोण को स्पष्ट करता है।
- यह व्यक्ति–केंद्रित विश्लेषण को महत्व देता है।
- आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों को समझने में सहायक है।
- यह शोध समाजशास्त्र के विद्यार्थियों एवं शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

1.4 अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

- मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा को स्पष्ट करना।
- सामाजिक क्रिया के विभिन्न प्रकारों का विश्लेषण करना।
- Verstehen पद्धति की व्याख्या करना।
- इस सिद्धांत की उपयोगिता एवं सीमाओं का अध्ययन करना।
- आधुनिक समाज में इसकी प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना।

1.5 शोध–प्रश्न (Research Questions)

- सामाजिक क्रिया की अवधारणा क्या है?
- सामाजिक क्रिया के प्रमुख प्रकार कौन–कौन से हैं?
- Verstehen पद्धति का समाजशास्त्र में क्या महत्व है?
- क्या यह सिद्धांत आधुनिक समाज में प्रासंगिक है?
- इस अवधारणा की प्रमुख सीमाएँ क्या हैं?

1.6 अध्ययन की परिधि एवं सीमाएँ (Scope and Limitations)

परिधि (Scope)–

- यह अध्ययन मुख्यतः वेबर के सामाजिक क्रिया सिद्धांत तक सीमित है।
- इसमें सैद्धांतिक (theoretical) विश्लेषण पर अधिक बल दिया गया है।
- आधुनिक संदर्भों में इसकी प्रासंगिकता का भी अध्ययन किया गया है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

सीमाएँ (Limitations)–

- अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों (secondary data) पर आधारित है।
- व्यक्तिनिष्ठता के कारण निष्कर्षों में विविधता संभव है।
- सभी सामाजिक व्यवहारों को इस सिद्धांत से पूर्णतः नहीं समझा जा सकता।

1.7 परिकल्पना (Hypothesis)–

- सामाजिक क्रिया की अवधारणा व्यक्ति के व्यवहार को समझने में प्रभावी है।
- वेबर का सिद्धांत आधुनिक समाज में भी प्रासंगिक है।
- सामाजिक क्रिया के प्रकार सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण में सहायक हैं।
- यह सिद्धांत सामाजिक संरचनाओं की अपेक्षा व्यक्ति के दृष्टिकोण को अधिक महत्व देता है।

1.8 शोध प्राविधि (Research Methodology)– मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा के इस अध्ययन में शोध का स्वरूप मुख्यतः वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक रखा गया है, जिसके अंतर्गत विषय से संबंधित सिद्धांतों, अवधारणाओं तथा विभिन्न विद्वानों के दृष्टिकोणों का गहन अध्ययन किया गया है। यह शोध गुणात्मक प्रकृति का है, जिसमें सामाजिक क्रिया के अर्थ, प्रकार एवं उसकी व्याख्यात्मक पद्धति को समझने पर विशेष बल दिया गया है।

इस अध्ययन में डेटा संकलन के लिए प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में मैक्स वेबर की मूल कृतियाँ जैसे Economy and Society तथा The Theory of Social and Economic Organization सम्मिलित हैं, जबकि द्वितीयक स्रोतों में समाजशास्त्र की मानक पुस्तकों, शोध–पत्रों, जर्नलों, शोध–प्रबंधों एवं विश्वसनीय ऑनलाइन सामग्री का उपयोग किया गया है।

विश्लेषण की दृष्टि से इस शोध में सामग्री विश्लेषण तथा व्याख्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है, जिसके माध्यम से सामाजिक क्रिया के विभिन्न पहलुओं को समझने का प्रयास किया गया है। साथ ही, तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए अन्य समाजशास्त्रीय विचारकों के विचारों के साथ वेबर के सिद्धांत का समीक्षात्मक अध्ययन भी किया गया है।

इस प्रकार, यह शोध मुख्यतः सैद्धांतिक एवं व्याख्यात्मक आधार पर निर्मित है, जिसका उद्देश्य सामाजिक क्रिया की अवधारणा को गहराई से समझना तथा उसकी समकालीन प्रासंगिकता का विश्लेषण करना है।

1.9 तथ्य–संकलन के स्रोत (Sources of Data Collection)– इस शोध में मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

प्राथमिक स्रोत (Primary Sources)–

मैक्स वेबर की मूल कृतियाँ जैसे Economy and Society, The Theory of Social and Economic Organization

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)–

- समाजशास्त्र की मानक पुस्तकें
- शोध–पत्र एवं जर्नल
- विश्वविद्यालयी शोध प्रबंध (Theses@Dissertations)
- प्रामाणिक ऑनलाइन स्रोत एवं ई–डेटाबेस

मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा के समाजशास्त्रीय अध्ययन में तथ्य–संकलन के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया जाता है। प्राथमिक स्रोतों के अंतर्गत साक्षात्कार, प्रश्नावली, अवलोकन तथा फील्डवर्क प्रमुख हैं, जिनके माध्यम से व्यक्तियों की सामाजिक क्रियाओं के पीछे निहित अर्थ, उद्देश्य तथा प्रेरणाओं को समझा जाता है। सहभागी अवलोकन विशेष रूप से उपयोगी होता है, क्योंकि इससे शोधकर्ता सामाजिक क्रिया के वास्तविक संदर्भ को अनुभव कर सकता है। द्वितीयक स्रोतों में पुस्तकें, शोध–पत्र, जर्नल, सरकारी रिपोर्ट, जनगणना आँकड़े तथा डिजिटल संसाधन सम्मिलित होते हैं। विशेष रूप से वेबर के मूल ग्रंथों जैसे Economy and Society तथा The Theory of Social and Economic Organization का अध्ययन आवश्यक होता है, क्योंकि इनमें सामाजिक क्रिया के प्रकारकृपरम्परागत, भावात्मक, मूल्य–तर्कसंगत और साधन–तर्कसंगत का विस्तृत विवेचन मिलता है।

1.10 साहित्य समीक्षा (Review of Literature)– मैक्स वेबर के सामाजिक क्रिया सिद्धांत पर अनेक विद्वानों ने अध्ययन किया है।

एंथनी गिडेन्स ने वेबर के सिद्धांत को आधुनिक समाज के संदर्भ में महत्वपूर्ण माना और सामाजिक क्रिया को संरचना एवं एजेंसी के बीच संबंध के रूप में देखा।

टैल्कट पार्सन्स ने वेबर के सिद्धांत को संरचनात्मक–कार्यात्मक दृष्टिकोण से जोड़ते हुए सामाजिक प्रणाली में इसकी भूमिका को स्पष्ट किया।

रॉबर्ट के. मर्टन ने मध्यम–सीमा सिद्धांत के माध्यम से वेबर के विचारों को अधिक व्यावहारिक बनाने का प्रयास किया।

हर्बर्ट ब्लूमर ने प्रतीकात्मक अंतःक्रियावाद के माध्यम से सामाजिक क्रिया के व्यक्तिनिष्ठ पहलू को और अधिक स्पष्ट किया।

इन अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा समाजशास्त्र के विभिन्न दृ ष्टिकोणों को प्रभावित करती रही है।

साहित्य समीक्षा के अंतर्गत विभिन्न समाजशास्त्रियों द्वारा प्रस्तुत विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन किया जाता है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा को किस प्रकार विकसित, व्याख्यायित और आलोचित किया गया है। वेबर के अतिरिक्त टैल्कट पार्सन्स, एमिल दुर्खीम तथा अन्य विद्वानों ने सामाजिक क्रिया और संरचना के संबंध पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पार्सन्स ने वेबर के विचारों को आगे बढ़ाते हुए सामाजिक व्यवस्था के संदर्भ में क्रिया–तंत्र (action

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

system) का प्रतिपादन किया, जबकि दुर्खीम ने सामाजिक तथ्यों की वस्तुनिष्ठता पर बल दिया, जो वेबर की व्यक्तिपरक अर्थ–समझ (verstehen) की पद्धति से भिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। समकालीन अध्ययनों में वेबर की अवधारणा को वैश्वीकरण, उपभोक्तावाद, तथा डिजिटल समाज के संदर्भ में पुनः व्याख्यायित किया जा रहा है, जिससे इसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

1.11 डेटा विश्लेषण (Data Analysis)– इस अध्ययन में डेटा का विश्लेषण गुणात्मक पद्धति के आधार पर किया गया है।

- उपलब्ध साहित्य का सामग्री विश्लेषण किया गया।
- विभिन्न विचारकों के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया।
- सामाजिक क्रिया के प्रकारों का विश्लेषण उदाहरणों के माध्यम से किया गया।

डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया में संकलित तथ्यों का वर्गीकरण, सारणीकरण तथा व्याख्या की जाती है। गुणात्मक विश्लेषण के अंतर्गत व्यक्तियों की सामाजिक क्रियाओं के पीछे निहित अर्थों, उद्देश्यों और मूल्यों को समझने का प्रयास किया जाता है, जो वेबर की व्याख्यात्मक पद्धति (interpretative method) के अनुरूप है। इसके साथ ही, यदि आवश्यक हो, तो मात्रात्मक तकनीकों का भी उपयोग किया जा सकता है, जैसे प्रतिशत, औसत या सहसंबंध, जिससे सामाजिक क्रिया के पैटर्न को स्पष्ट किया जा सके। विश्लेषण के दौरान सामाजिक क्रिया के चारों प्रकारों के आधार पर डेटा का वर्गीकरण किया जाता है और यह देखा जाता है कि किसी विशेष सामाजिक संदर्भ में कौन–सा प्रकार प्रमुख है। इस प्रकार, डेटा विश्लेषण न केवल तथ्यों की प्रस्तुति करता है, बल्कि उनके गहरे सामाजिक अर्थों को भी उजागर करता है, जो वेबर के समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण की मूल विशेषता है।

इस प्रकार, विश्लेषण मुख्यतः व्याख्यात्मक एवं सैद्धांतिक आधार पर किया गया है।

1.12 चर्चा (Discussion)– अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा समाज को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण उपकरण प्रदान करती है।

- यह सिद्धांत व्यक्ति के व्यवहार के पीछे निहित अर्थ को समझने पर बल देता है।
- सामाजिक क्रिया के चार प्रकार समाज के विभिन्न व्यवहारों को वर्गीकृत करने में सहायक हैं।
- Verstehen पद्धति सामाजिक विज्ञान को अधिक मानवीय और व्याख्यात्मक बनाती है।

हालांकि, इस सिद्धांत में कुछ सीमाएँ भी हैं, जैसे अत्यधिक व्यक्तिनिष्ठता और सामाजिक संरचना की अपेक्षाकृत उपेक्षा।

1.13 परिणाम (Findings)– अध्ययन के प्रमुख निष्कर्ष निम्नलिखित हैं–

- सामाजिक क्रिया की अवधारणा व्यक्ति के व्यवहार को समझने में प्रभावी है।
- वेबर का सिद्धांत आधुनिक समाज में भी अत्यंत प्रासंगिक है।
- सामाजिक क्रिया के चारों प्रकार सामाजिक व्यवहार के विश्लेषण में उपयोगी हैं।
- Verstehen पद्धति समाजशास्त्र को व्याख्यात्मक दृष्टिकोण प्रदान करती है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

- यह सिद्धांत सामाजिक संरचना की तुलना में व्यक्ति की भूमिका को अधिक महत्व देता है।

निष्कर्ष (Conclusion)– अंततः यह कहा जा सकता है कि मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा समाजशास्त्र के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और प्रभावशाली सिद्धांत है। मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा समाजशास्त्र के क्षेत्र में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली सिद्धांत के रूप में स्थापित होती है। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि समाज को समझने के लिए केवल बाह्य संरचनाओं, संस्थाओं और व्यवस्थाओं का विश्लेषण पर्याप्त नहीं है, बल्कि व्यक्ति के व्यवहार के पीछे निहित अर्थ, उद्देश्य और प्रेरणाओं को समझना भी उतना ही आवश्यक है। वेबर ने समाजशास्त्र को एक व्याख्यात्मक दिशा प्रदान करते हुए यह प्रतिपादित किया कि सामाजिक वास्तविकता का सही आकलन तभी संभव है जब हम मानव क्रियाओं के अर्थ को "Verstehen" पद्धति के माध्यम से समझें।

अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक क्रिया के विभिन्न प्रकार साधनात्मक तर्कसंगत, मूल्य–तर्कसंगत, भावात्मक तथा परंपरागतकृमानव व्यवहार की जटिलता और विविधता को स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करते हैं। ये प्रकार न केवल सामाजिक व्यवहार के वर्गीकरण में सहायक हैं, बल्कि यह भी दर्शाते हैं कि व्यक्ति के निर्णय केवल तर्क पर आधारित नहीं होते, बल्कि वे मूल्य, भावनाओं और परंपराओं से भी प्रभावित होते हैं।

हालाँकि, इस सिद्धांत की कुछ सीमाएँ भी हैं, जैसे इसकी अत्यधिक व्यक्तिनिष्ठता तथा सामाजिक संरचनाओं और शक्ति संबंधों की अपेक्षाकृत उपेक्षा, फिर भी इसका महत्व कम नहीं होता। विशेषकर समकालीन वैश्वीकरण और डिजिटल युग में, जहाँ सामाजिक अंतःक्रियाएँ निरंतर बदल रही हैं, वेबर की यह अवधारणा मानव व्यवहार के गहन विश्लेषण के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा समाजशास्त्र के अध्ययन में एक सुदृढ़ सैद्धांतिक आधार प्रदान करती है, जो न केवल पारंपरिक समाज को समझने में सहायक है, बल्कि आधुनिक और उत्तर–आधुनिक समाज की जटिलताओं को समझने में भी समान रूप से प्रासंगिक एवं उपयोगी है।

अनुशंसाएँ (Recommendations) –

1 मैक्स वेबर की सामाजिक क्रिया अवधारणा को आधुनिक डिजिटल समाज के संदर्भ में पुनः व्याख्यायित किया जाए।
2 समाजशास्त्रीय शोध में "Verstehen" पद्धति का अधिक व्यापक उपयोग किया जाए।
3 सामाजिक क्रिया के सिद्धांत को व्यवहारिक शोध से जोड़ा जाए।
4 इस सिद्धांत को अन्य समाजशास्त्रीय दृष्टिकोणों (जैसे मार्क्सवाद, कार्यात्मकतावाद) के साथ समन्वित किया जाए।
5 उच्च शिक्षा में वेबर के सिद्धांतों को व्यावहारिक उदाहरणों सहित पढ़ाया जाए।
6 सोशल मीडिया व्यवहार के अध्ययन में सामाजिक क्रिया सिद्धांत का उपयोग बढ़ाया जाए।
7 भारतीय समाज के संदर्भ में इस सिद्धांत का पुनर्मूल्यांकन किया जाए।
8 अंतःविषयक शोध में इस अवधारणा को शामिल किया जाए।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, June-Dec 2018

9 सामाजिक परिवर्तन के अध्ययन में व्यक्तिगत दृष्टिकोण को अधिक महत्व दिया जाए।
10 युवा वर्ग के व्यवहार अध्ययन में इस सिद्धांत को लागू किया जाए।
11 नीति–निर्माण में सामाजिक व्यवहार के अर्थ को ध्यान में रखा जाए।
12 शोध में गुणात्मक पद्धतियों को बढ़ावा दिया जाए।
13 सामाजिक क्रिया सिद्धांत को समकालीन वैश्विक समस्याओं के विश्लेषण में लागू किया जाए।

सन्दर्भ सूची –

1. Max Weber – Economy and Society, University of California Press, 1978, ISBN: 9780520035003
2. Max Weber – The Theory of Social and Economic Organization, Free Press, 1947, ISBN: 9780029344507
3. Max Weber – The Protestant Ethic and the Spirit of Capitalism, Routledge, 2001, ISBN: 9780415254069
4. Anthony Giddens – Sociology, Polity Press, 2017, ISBN: 9780745696683
5. Anthony Giddens – Capitalism and Modern Social Theory, Cambridge University Press, 1971, ISBN: 9780521097857
6. Haralambos – Sociology: Themes and Perspectives, Oxford University Press, 2013, ISBN: 9780195672596
7. Talcott Parsons – The Structure of Social Action, McGraw-Hill, 1937, ISBN: 9780029242407
8. Robert K Merton – Social Theory and Social Structure, Free Press, 1968, ISBN: 9780029211304
9. Peter Berger – Invitation to Sociology, Anchor Books, 1963, ISBN: 9780385065290
10. Thomas Luckmann – The Social Construction of Reality, Penguin, 1966, ISBN: 9780140135480
11. George Ritzer – Sociological Theory, McGraw-Hill, 2011, ISBN: 9780078027017
12. George Ritzer – Modern Sociological Theory, McGraw-Hill, 2000, ISBN: 9780071186780
13. Randall Collins – Four Sociological Traditions, Oxford University Press, 1994, ISBN: 9780195082081
14. Jonathan Turner – The Structure of Sociological Theory, Wadsworth, 2012, ISBN: 9780495093442
15. Bryan Turner – Max Weber: From History to Modernity, Routledge, 1993, ISBN: 9780415091190
16. Alan Swingewood – A Short History of Sociological Thought, Palgrave, 2000, ISBN: 9780333692929
17. Raymond Aron – Main Currents in Sociological Thought, Penguin, 1967, ISBN: 9780140133233
18. Alex Inkeles – What is Sociology?, Prentice Hall, 1964, ISBN: 9780139550898
19. Kingsley Davis – Human Society, Macmillan, 1949, ISBN: 9780023300103
20. Bottomore – Sociology: A Guide to Problems and Literature, Allen & Unwin, 1972, ISBN: 9780043010464
21. Coser – Masters of Sociological Thought, Harcourt Brace, 1977, ISBN: 9780155551305
22. Zeitlin – Ideology and the Development of Sociological Theory, Prentice Hall, 1981, ISBN: 9780134539447
23. Abraham – Modern Sociological Theory, Oxford University Press, 2006, ISBN: 9780195674668